पाठ्यक्रम के निर्धारण का नज़रिया

हृदय कांत दीवान

एक संतुलित पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम में चारों घटक अवधारणाएं, कौशल, जानकारी और आदत व नैतिक मूल्य होंने चाहिए। आप ऐसा कार्यक्रम नहीं बना सकते, जिसमें एक ही पक्ष पर आग्रह हो। अतः जिस सीमा तक कार्यक्रम में एक पक्ष पर अधिक बल दिया गया है, उस सीमा तक वह कार्यक्रम दूसरे कार्यक्रमों से भिन्न होगा। इस संदर्भ में पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम के पाठ्यक्रम को तय करने के अलग–अलग दृष्टिकोंण व नज़रिए का उल्लेख इस आलेख में किया गया है। इसको हमें समझने की ज़रूरत है।

यदि कोई पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम विभिन्न प्रकार की जानकारी रखने को महत्वपूर्ण मानता है व उसे एक प्रमुख लक्ष्य के रूप में देखता है तो कार्यक्रम का फोकस होगा कि बच्चों के पास बहुत सारी जानकारी हो और पढ़ाने का तरीका ऐसा होगा जो याद करने के अच्छे तरीकों पर बल देगा। दूसरी ओर, यदि पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम यह मानता है कि उसका लक्ष्य है कि बच्चे के द्वारा ध्यान से अवलोकन करना, अवलोकन का विश्लेषण करना, निष्कर्ष निकालना है तो ऐसे मौके निर्मित करने होंगे, जो बच्चे को अवलोकन के रिकार्ड रखने के, विश्लेषण के व अपने सामान्यीकरणों को बनाने के मौके देगा। आप उन्हें यह सब, छोटे–छोटे समूह में करने को कह सकते हैं, जिससे उनमें आत्मविश्वास आए, और दूसरे को सुनना, उसे बोलने का मौका देना, टिप्पणी करना व अपने कथन पर टिप्पणी सुनकर समझ पाना सीखें। तीसरी तरह का कार्यक्रम वह हो सकता है, जो यह मानता हो कि पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को सही ढंग से व्यवहार करना सिखाना है और सही गलत का ज्ञान देना है। यह कार्यक्रम बच्चों को व्यवहार करने के तरीकों में अन्तर्निहित खतरों से अवगत कराएगा और इस बात से भी कि उन्हें कैसे जीना चाहिए। कार्यक्रम यह सब उन्हें बतायगा और यह मांग करेगा कि उन्हें 'जो करना है' और 'जो नहीं करना है' दोनों याद हों। इस तरह का पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम उदाहरण के लिए प्रदूषण, असामाजिक व्यवहार, प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग जैसे मसलों पर बच्चों का ध्यान खींचेगा।

पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम के निर्धारण का फ़ोकस कुछ खास तरह के कौशलों का विकास भी हो सकता है। इसमें कुछ विशेष किस्म के कौशल जैसे औजारों व यंत्रों का सही तरीके व ध्यान से उपयोग, इसमें ध्यान व स्पष्टता से अवलोकन लेना व रिकार्ड रखना या फिर अच्छा साक्षात्कार करना और हर तरह के आंकड़ों को एकत्रित करने व प्रदर्शित करने के ढंग को सीखना। इनमें सामान्यीकरण करने की, पैटर्न पहचानने की, समस्या सुलझाने की व नयी संभावनाएं व नये उत्तर खोजने की क्षमता भी शामिल है। इस तरह के कार्यक्रम में यह जरूरी नहीं होगा कि बच्चे के पास कोई विशेष जानकारी है या नहीं। यह भी जरूरी नहीं कि उसे कुछ खास अवधारणाओं की समझ है या उसमें कुछ खास मूल्य आ गए हैं। अवधारणाओं की समझ का थोड़ा बहुत विकास तो साथ–साथ होता रहेगा, किन्तु यह सोचना कि कारण कैसे ढूंढ़ें,तर्क कैसे समझें व गढ़ें, विश्लेषण कैसे करें, नया सोचना व उसे बना पाना ज्यादा महत्वपूर्ण है।

इसी तरह से कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि तार्किक चिन्तन या बुद्धिमतापूर्ण व्यवहार भी एक प्रकार का मूल्य ही है परन्तु यह पूर्व वर्णित बातों से काफी अलग है और अलग तरह की पूर्व मान्य धारणाओं पर आधारित है। इस तरह पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम का निर्धारण करने वाले यह दलील देंगे कि अगर आपने बच्चे में जिज्ञासा उत्पन्न कर दी तो बहुत है या वह जिस अनुभव का हिस्सा है उसका विश्लेषण कर उसे समझा सके तो बहुत है और इसके आगे जाने की आवश्यकता भी नहीं है। हमारे कार्यक्रम की मूल्यों की किसी अन्य सूची को निर्धारित करने की आवश्यकता नहीं।

पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रमों के संदर्भ में आगे कुछ जो उदाहरण दिये गये हैं, उन्हें इस सन्तुलन की गुणवत्ता व सीमा के सन्दर्भ में विश्लेषित करने की आवश्यकता है। इन्हें इस दृष्टि से भी विश्लेषित करना चाहिए कि विद्यालय में पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम रखने के उद्देश्य की क्या समझ है और ज्ञान का बच्चों के साथ क्या संबंध है।

उदाहरण के लिए पत्तियों का अध्ययन करने के लिए एक कक्षा को अलग–अलग तरीकों से संरचित किया जा सकता है। ''अमुक के बारे में सीखना'' या ''अमुक के बारे में ज्ञान देना'' कथन से ही बहुत अलग–अलग दृष्टिकोण झलकते हैं। ''ज्ञान देने'' का अर्थ होगा कि बच्चों को विभिन्न प्रकार की पत्तियों के नाम बताना, उनके वर्गों के नाम बताना, हर वर्ग की पत्तियों के उदाहरण बताना तथा उन्हें इन वर्गों को लिखने व याद करने के लिये कहना। इसमें थोड़ा परिवर्तन यह हो सकता है कि उन्हें नये उदाहरण जोड़ने के लिए भी कहा जाय और अपने प्रयास से उन्हें एक स्क्रेप बुक बनाने को कहा जाय। इन दोनों तरीकों में भी थोड़ा बहुत अन्तर है। यह अंतर ज्ञान को वे कैसे समझते हैं और यह बच्चे से किस प्रकार से संबंधित है, के संदर्भ में है।

लेकिन इसके अतिरिक्त एक और बिल्कुल अलग तरीका भी हो सकता है। ऐसा तरीका जिसमें बच्चा पत्तियों का निरीक्षण करे एवं स्वयं उनका वर्गीकरण करे। यह आसान नहीं है क्योंकि यह भी हो सकता है कि बच्चे द्वारा बनाए गये वर्ग उपयोगी न हों। ये सार्थक हों इसके लिए बच्चे को धीरे–धीरे गहराई से अवलोकन करने में पारंगत बनाना चाहिए, ताकि बच्चे को जो नई सूचनाएं मिलें उनके आधार पर वर्गों को समझ सके। उसे इन वर्गों की सीमा व कमज़ोरी समझ में आए, जिससे वह इनमें सुधार कर सके। उसे धीरे–धीरे इन वर्गों का उद्देश्य और महत्त्व समझ में आना चाहिए। ताकि वह इस बात को समझ पाए कि ये ही वर्ग क्यों चुने गए हैं। इस प्रक्रिया से यह भी स्वीकारने में मदद मिलेगी कि बच्चों द्वारा सोचे गए कुछ वर्ग किन्हीं विशेष संदर्भों में महत्त्वपूर्ण हैं और किसी एक उदाहरण से सामान्यीकरण में सहायता नहीं मिलती। इस प्रकार के कार्यक्रम में बच्चे व उसके ज्ञान के साथ का सम्बन्ध एक अलग प्रकार का होता है। इन दोनों कार्यक्रमों के उद्देश्य भी भिन्न हैं।

पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम, विकास के कई चरणों से गुज़रा है और ये सभी एक ही दिशा में हुए हों, ऐसी बात नहीं है। इन कार्यक्रमों के कुछ उदाहरण आगे दिए जाएंगे। इन्हें विश्लेषित करने की ज़रूरत है।

नीचे दिए गए प्रश्नों में से हमें हर एक प्रश्न का उत्तर देना होगा–

1. इस कार्यक्रम का बच्चे के सीखने के संबंध में क्या ज़ोर है और अपेक्षा है?

2. कार्यक्रम में बच्चे से कक्षा में क्या करने की अपेक्षा की गई है? वे कौनसे संभव कार्य हैं जो कार्यक्रम के सिद्धान्तों के अनुकूल हैं?

3. कार्यक्रम, शिक्षक की क्या भूमिका होने की अपेक्षा करता है?

4. कार्यक्रम, पर्यावरणीय अध्ययन को कैसे परिभाषित करता है?

5. कार्यक्रम, किन कौशलों पर फ़ोकस करता है?

6. कार्यक्रम, किन अवधारणाओं पर बल देता है?

7. बच्चे पर्यावरण अध्ययन को कैसे सीखेंगे, इस बारे में कार्यक्रम की क्या समझ है?

8. बच्चे स्कूल में आने से पहले पर्यावरण अध्ययन के बारे में क्या जानते हैं, इस बारे में कार्यक्रम की क्या मान्यता है; और वह इसका उपयोग कैसे करता है?

9. उसका पर्यावरण पर क्या दृष्टिकोण है, उसमें अवधारणा कैसे विकसित होती है?

जब आप विभिन्न संभव नज़रियों के उदहारणों को पढ़कर उनके दस्तावेजों की तुलना करते हैं तो आप अपने प्रश्नों को निर्मित करेंगे और साथ ही उनका विश्लेषण भी।

यहां यह इंगित करना आवश्यक है कि पर्यावरण अध्ययन के स्वरूप के मुद्दे को एक विषय के रूप में भी हमें मस्तिष्क में रखना चाहिए। एनसीएफ ने भी इस बात को स्पष्ट रूप से दोहराया है कि पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम को देखने के 3–4 दृष्टिकोण हो सकते हैं। पहला, एक कार्यक्रम जिसका बल पर्यावरणीय शिक्षा पर है। इसका अर्थ है कि आप पर्यावरण को समझें, उसके संदर्भ को समझें और उसके दोहन के खतरों व दुरूपयोग को समझें। इसमें अपने आप सामाजिक सरोकार और समतावादी दृष्टिकोण के मुद्दे उभर कर आ सकेंगे। यह वर्तमान पर्यावरणीय परिस्थिति और उसके क्षय को रोकने के संदर्भ में क्या संभव कदम हो सकते हैं, के लिए प्रमुख सहयोगियों को लाएगा। इसका एक बदलाव यह हो सकता है कि इन पहलुओं को नज़रअंदाज़ कर दें, क्योंकि उन्हें अमूर्त एवं जटिल समझा जा सकता है। वे झगड़े के रूप में सामने आएं, इसलिए उन्हें हम नज़रअंदाज़ कर दें और इसके बाव़जूद उन पर विश्वास करें, कि छोटे व्यक्तिगत प्रयत्न वस्तुतः वैश्विक परिस्थिति को बदल सकते हैं और बच्चे के तरीके से उसे करने का सुझाव दें। यह एक इस प्रकार का ऐसा नज़रिया है, जिसका बल कार्यक्रम को एक साधन के रूप में इस्तेमाल करते हुए लोगों को शिक्षित करने, खासतौर से बच्चों के स्थायीत्व, संतुलन और भविष्य को देखना है।

पर्यावरण को देखने का दूसरा नज़रिया, यह हो सकता है कि बच्चे को उसके स्वयं के पर्यावरण के बारे में सीखने में सहायता करें। मूलतः यह कार्यक्रम बच्चों को उनके स्वयं के पर्यावरण को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेगा। इसलिए उसके पास उसके पर्यावरण के बारे में क्या सूचना है, उसके कौन–कौन से पहलू हैं? और उसके स्वयं के अनुभव व ज्ञान का उपयोग उसके पर्यावरण की संभावनाओं का गहरा अन्वेषण निर्मित करने में उसकी मदद करेगा। इस नज़रिए में पर्यावरणीय अध्ययन को खोज करने, विश्लेषण करने, परिकल्पनाओं का निर्माण करने, तर्कों की जांच करने, उनको चुनौती कैसे दी जा सकती है, की समझ विकसित करने, प्रमाण कैसे एकत्रित किए जा सकते हैं? की संभावनाओं का पता लगाने या कुछ धारणाओं को गलत सिद्ध करने में एक साधन के रूप में देखा गया है। अतः इस कार्यक्रम को बच्चों की क्षमताओं को विकसित करने के लिए नए ज्ञान की प्राप्ति के एक साधन के रूप में देखा गया है।

तीसरा नज़रिया, कार्यक्रम को बच्चों को विज्ञान और सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित मुद्दों को सिखाने के एक साधन के रूप में देखना है। प्राथमिक विद्यालय के कार्यक्रम को बच्चों में ऐसी क्षमताएं विकसित करने के कदम के रूप में देखा जाता है, जिससे वे आगे की कक्षाओं में विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान पढ़ने के लिए तैयार हो सकें। इसमें पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम का एक नज़रिया

है, जो कि बच्चे के अनुभव को केन्द्र में रखता है और जिसमें विज्ञान और सामाजिक विज्ञान की अवधारणात्मक समझ को निर्मित करने में उनके उपयोग की जरूरत होती है। बच्चे को उसके कार्य क्षेत्र में व्यस्त रखने के लिए केवल मात्र एक रणनीति के रूप में उसे सामग्री प्रदान करना है। हमें इन तीन किनारों और उनके निहितार्थों को परखना और यह तय करना कि उनको हमारी कक्षाओं और सामग्रियों में हम कैसे शामिल करेंगे, को देखने और समझने की जरूरत है।

पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम में नैतिकता का प्रश्न जटिल है। यह जटिल इसलिए है, क्योंकि जिस प्रकार के मुद्दे चर्चा के लिए चुने जाते हैं और जिनमें विद्यार्थियों को व्यस्त रखा जाता है, उनमें कुछ पूर्व निर्धारित मान्यताएं होती हैं, जो उनके चुनाव में स्वाभाविक रूप से प्रतिबिम्बित होती है। उदाहरण के लिए, उदारवादी लोकतांत्रिक ढांचे में बहुलता, समता व विविधता का सम्मान एवं हर इन्सान की इज्ज़त करने की धारणा निहित है। व्यक्ति का समाज के साथ सम्बन्ध एवं समाज का व्यक्ति के प्रति उत्तरदायित्व, लोकतंत्र में अन्य व्यवस्थाओं के मुकाबले भिन्न होता है। उदाहरण के तौर पर सामन्ती व्यवस्था में सबके लिए समान सम्मान की बात नहीं होगी। उदारवादी लोकतांत्रिक समाज में जहां समानता, व समता पर आग्रह होगा, वहीं कुछ कार्य करने के तरीकों को स्वीकार किया जाएगा व कुछ को अस्वीकार किया जाएगा। उदाहरण के लिए इसमें बोलने की स्वतंत्रता, खुली बाज़ार व्यवस्था व निजी सम्पत्ति को स्वीकारा जाएगा। इस प्रकार की मान्यता के ये सिद्धान्त तय करेंगे कि पर्यावरण अध्ययन में क्या सम्मिलित किया जाएगा। इसके अलावा विचार कितने अमूर्त हैं, बच्चे से सम्बन्धित हैं या नहीं और उसके द्वारा उन्हें माना जाएगा, वर्तमान परिस्थिति को समझने व उसका एक भाग होने का भी यहां प्रश्न है। उदाहरण के लिए यदि हम भोपाल में हुई मिथाइल आइसोसाइनाइड जैसी विषैली गैस के रिसाव की औद्योगिक दुर्घटना को लें, तो हम देखते हैं कि उसमें सहायता प्रदान करने में एक लम्बी प्रक्रिया चली, चिकित्सा के कार्यों में व्यवधान उपस्थित हुआ, पीड़ितों के उपचार में विलम्ब हुआ। इस दुर्घटना की व्यैक्तिक रूप से नैतिक जिम्मेदारी तय करने में भी संदेह उत्पन्न होता है। इसलिए यह स्पष्ट है कि यहां समता के प्रश्न के कई आयाम हैं। इस प्रकार की चिन्ताओं का समावेश हम कैसे करें? यदि इसे शामिल करने में विरोधी यह आपत्ति करते हैं कि ये बच्चों के लिए रुचिकर नहीं हो सकता, तो यह पूछा जा सकता है कि क्या इसके कोई प्रमाण हैं? यदि आप यह मान भी लें कि यह हर एक के लिए रुचिकर नहीं होगा, लेकिन यह निश्चित रूप से भोपाल के बच्चों के लिए रुचिकर अवश्य ही होगा। बल्कि वे बच्चे भी इसमें रूचि लेंगे जिनके आसपास औद्योगिक क्षेत्र हैं।

अगर हम यह तय करते हैं कि इसे शामिल करेंगे तो प्रश्न आता है कि इसको कैसे प्रस्तुत किया जाय? कितने आंकड़े, किस प्रकार के आंकड़े, किनके परिप्रेक्ष्य में, कितने आयाम व किस अवधारणात्मक ढांचे में प्रस्तुत किए जाएं? पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम के लिए ऐसी परिस्थितियों का विश्लेषण व उसका तरीका बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

दोनों तरफ के तर्क और मत हैं। अतः क्या रूख अपनाएं, यह तय करना आसान नहीं है। हमने तो सिर्फ़ चुनाव के लिए एक समस्या उठाई है कि बच्चों को किस में व्यस्त रखा जाए। इस प्रकार के विभिन्न विस्तृत उदाहरणों में से, क्या हम कुछ को शामिल करें या किसी एक को। मुद्दा यह भी है कि इस प्रकार की घटनाओं के बारे में हम चर्चा कैसे करें? जातिगत ऊंच–नीच के प्रमाण पर चर्चा एवं संवैधानिक सिद्धान्तों की अवहेलना को कक्षाओं के दायरे में कैसे लाया जा सकता है? और यदि इन मुद्दों को हम कक्षा के दायरे में नहीं लाना चाहते तो इनके कक्षा में नहीं लाने के क्या कारण हैं?

हृदय कांत दीवान : विद्या भवन सोसायटी में शैक्षिक सलाहकार,
अनुवाद : डा. ए.बी. फाटक